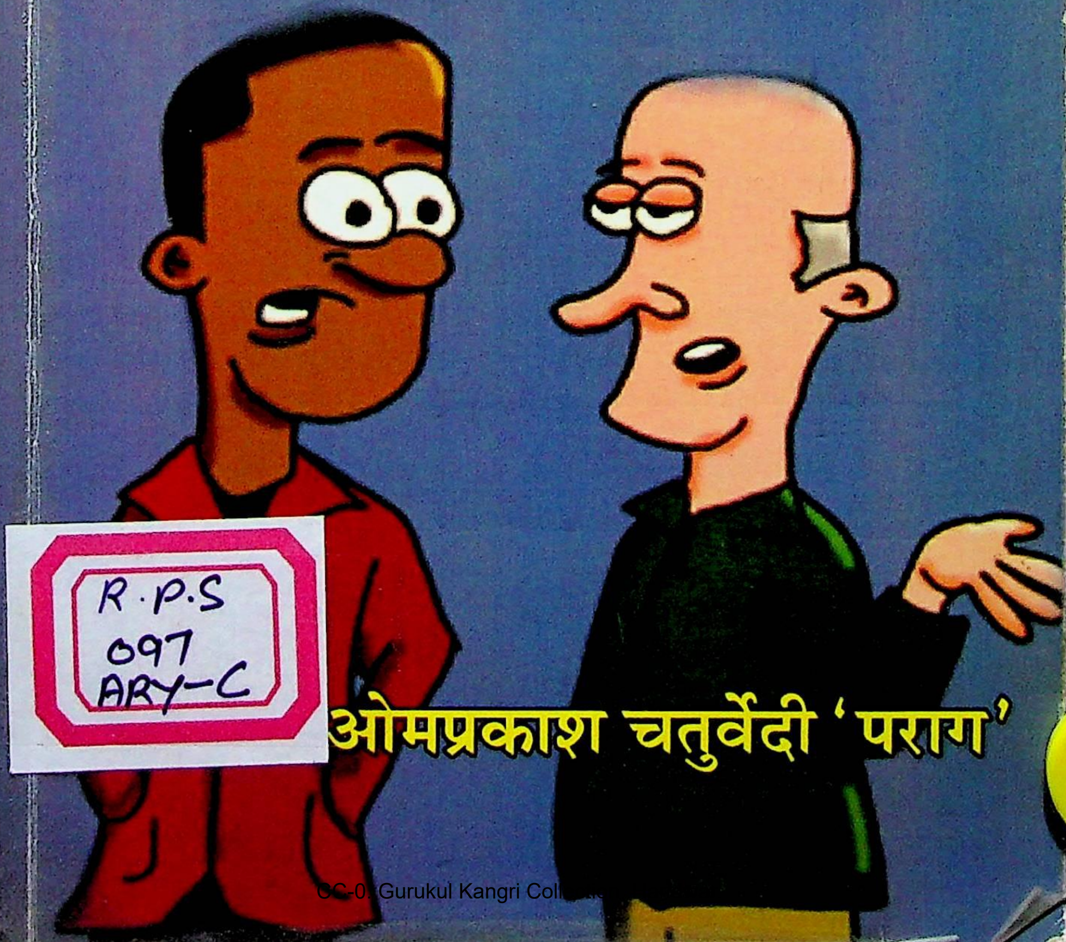
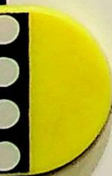
छोड़ो भी महाराज



ओमप्रकाश चतुर्वेदी 'पराग'



छोड़ो भी महाराज

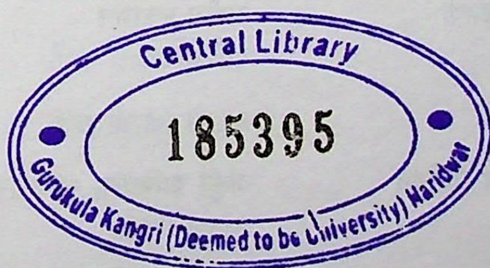
(ओमप्रकाश चतुर्वेदी 'पराग' के व्यंग्य-छंद)

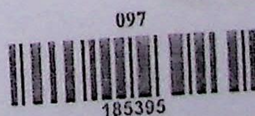
आदरणीय डा० रामस्वरूप आर्य
को सादर, सस्नेह
पराग
14-4-2012
गौड़ होम्स,
सी-632, गोविन्दपुरम,
गाजियाबाद
201013

छोड़ो भी महाराज

(व्यंग्य-छंद संग्रह)

ओमप्रकाश चतुर्वेदी 'पराग'
उर्फ़
अज्ञानी





असीम प्रकाशन
गाज़ियाबाद

ISBN : 978-81-922655-2-0

छोड़ो भी महाराज

लेखक	:	**ओमप्रकाश चतुर्वेदी 'पराग'**
सर्वाधिकार सुरक्षित	:	**लेखक**
प्रकाशक	:	**असीम प्रकाशन** गाजियाबाद
मूल्य	:	80.00 (अस्सी रुपये)
शब्द-संयोजन	:	**अंकुर ग्रांफिक्स, गाजियाबाद** 9899547692
आवरण	:	**अनिल असीम, गाजियाबाद** 9810426037
मुद्रण-व्यवस्था	:	Printech The Press, गाजियाबाद 0120-4560628

CHHODO BHEE MAHARAJ
by Omprakash Chaturvedi 'Parag'



समर्पण

'छोड़ो भी महाराज' की प्रेरणा-स्रोत

प्रिय सहधर्मिणी

स्व. निर्मला चतुर्वेदी की

पावन-स्मृति को



डॉ० राम स्वरूप आर्य, बिजनौर
की स्मृति में सादर भेंट–
हरप्यारी देवी, चन्द्रप्रकाश आर्य
संतोष कुमारी, रवि प्रकाश आर्य

भूमिका

'काज़ी जी दुबले दुनिया के अंदेशे से' । केवल काज़ी ही क्यों, प्रत्येक संवेदनशील व्यक्ति को दुनियाभर की चिंताएँ व्यथित करती रहती हैं। फिर कवि, लेखक अथवा अन्य कलाधर्मी-प्राणी की संवेदनाओं का सितार तो अक्सर झनझनाता ही रहता है। मैं भी अपवाद नहीं।

घर में सवेरे-सवेरे अखबार लेकर बैठता तो हर दिन कई ऐसे समाचार व घटनाएँ मेरे संज्ञान में, आती रहतीं कि मैं आकुल-व्याकुल होने लगता। कभी कहता, 'देखो, क्या तमाशा है, महाभ्रष्ट नेता भ्रष्टाचार के विरुद्ध भाषण दे रहा है, वायदे कर रहा है कि वह भ्रष्टाचार का समूल नाश करके ही दम लेगा। अथवा कभी सरकार विरोधी नेता की बात कि हमारी सरकार बनते ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। कभी किसी सामाजिक कार्यकर्ता के विषय में समाचार कि दहेज की पूर्ति न होने के कारण उसने अपनी पुत्रवधू को घर से निकाल दिया और कभी-कभी तो उसे आत्महत्या के लिए विवश कर दिया'।

पास बैठकर दाल-चावल बीनती, अथवा स्वेटर बुनती पत्नी को मेरा इस प्रकार चिंतित और आकुल रहना अच्छा नहीं लगता। वह अक्सर मेरे हाथ से अखबार छीनकर कहती, 'छोड़िये भी, आपकी बिना मतलब की परेशानी मुझे अच्छी नहीं लगती। सारे जहाँ का दर्द अपने सीने में क्यों पालते रहते हो।'

उन दिनों मैं पाक्षिक पत्र 'गौड़संस टाइम्स' में साहित्य-संपादक के रूप में कार्यरत था। एक दिन समाचार-पत्र के कार्यालय में बैठे-बैठे सूझा कि एक काव्यात्मक-स्तंभ लिखूँ, जिसमें देश, दुनिया, आदमी, समाज,

राजनीति, कुरीतियों, विसंगतियों और विद्रूपताओं का ज़िक्र करूँ, उन पर चोट करूँ और अंतिम पँक्ति में यह दर्शाऊँ कि इस परिस्थिति से पार पाना आसान नहीं, अतः इसे छोड़ दिया जाए। विचार पक्का हो गया। सोच रहा था कि शीर्षक क्या दूँ? तभी पत्नी निर्मला ने एक दिन मेरे हाथ से अखबार खींचते हुए कहा—'अब छोड़िये न महाराज। देखिये चाय बिल्कुल ठंडी हो गई है।' बस संग्रह का शीर्षक मिल गया, 'छोड़ो भी महाराज।' यह एक साढ़े-सात-पदी स्तंभ था। आरंभ की छः पंक्तियों में समस्या का वर्णन किया जाता, सातवीं पंक्ति में प्रश्न उछाला जाता कि अब क्या हो सकता है और अंतिम पंक्ति में कहा जाता, 'छोड़ो भी महाराज!'

इस प्रकार 'छोड़ो भी महाराज!' स्तंभ 'गौड़संस टाइम्स' में छपने लगा। मैं पत्र में एक गद्यात्मक व्यंग्य-स्तंभ भी लिख रहा था, जिसका शीर्षक था 'बलिहारी' और जिसके लेखक के रूप में मेरा उपनाम 'पराग' जा रहा था। एक ही नाम से दो स्तंभ लिखने की बात नहीं जँची। अतः 'छोड़ो भी महाराज' के लेखक का नाम 'अज्ञानी' दिया जाने लगा। यह स्तंभ बहुत लोकप्रिय हो गया। लोग मुझसे तथा पत्र के स्वामी-संपादक श्री बी.एल. गौड़ से अक्सर पूछते कि यह अज्ञानी कौन है? गौड़ साहब कहते, 'यह, पराग जी को पता होगा'। मैं बताता कि कोई अज्ञानी ही होगा, उसका ज्ञान-प्राप्त करके आप क्या करेंगे।

यही कारण है कि प्रस्तुत पुस्तक के लेखक के रूप में मेरे नाम के बाद उर्फ़ अज्ञानी लिखा गया है।

एक अन्य दैनिक पत्र के लिए ढेर सारी चुनावी षट्पदियां लिखीं। इस कृति में उनमें से भी कुछ को शामिल कर लिया गया है।

असीम प्रकाशन को धन्यवाद देता हूँ कि उसने अति अल्प समय में पुस्तक का प्रकाशन संभव कर दिखाया। आभारी हूँ हास्य-व्यंग्य के प्रसिद्ध कवि अनिल असीम का जिन्होंने कृति के आवरण की सर्जना की। ये साढ़े-सात-पदियाँ और षट्पदियाँ आपको कैसी लगीं, मैं उपकृत होऊँगा, यदि आप मुझे इसके सम्बन्ध में सूचित करेंगे।

—ओमप्रकाश चतुर्वेदी 'पराग'

छोड़ो भी महाराज

(सामाजिक - साढ़े - सातियाँ)



सुख-दुख की सम्भावना, साँसों का संघर्ष
झोली में ले आ गया, लो फिर नूतन वर्ष
विगत वर्ष में महँगाई ने बहुत सताया
बढ़ा अभाव काम का, आतंकों का साया
दो हजार दस से है कुछ राहत की आशा
शायद नियति लिखे जीवन की नव-परिभाषा
क्या न चुकाना पड़ेगा पिछले ऋण का ब्याज़?
छोड़ो भी महाराज।

सन्दर्भ : वर्ष 2010 के आगमन पर।

व्याप्त सकल संसार में, मैं हूँ भ्रष्टाचार
कलियुग का अवतार हूँ, मेरे हाथ हजार
क्यों पगलाये लोग, व्यर्थ मुझसे टकराते
महारथी माँझी भी मेरी थाह न पाते
कितने आए सदाचार पर देने भाषण
मेरे तीर चले तो छोड़ गए रण-प्रांगण
जो अब तक न कभी हुआ, वह होगा क्या आज?
छोड़ो भी महाराज।

काबू से बाहर हुआ, दानव भ्रष्टाचार
अन्ना लेकर आ गए, अनशन का हथियार
उमड़ी भीड़ समर्थन में, गुंजाती नारे
अन्ना तुम संघर्ष करो, हम साथ तुम्हारे
झुँझलाई सरकार, दिखाए भारी तेवर
पर जनमत के सम्मुख, विफल हुए आडम्बर
क्या न दबेगी अब कभी, जनता की आवाज़?
छोड़ो भी महाराज।

अब न रहेगा देश में किंचित भ्रष्टाचार
हम, बस हम ही करेंगे, इसका बँटाढार,
'हाँक रहे हैं आप डींग यूँ ही बरसों से'
'किन्तु, आप तो आए बस, परसों-नरसों से'
भ्रष्टाचार मिटाने की अब होड़ लगी है
श्रेय हमें ही मिले, सभी में आस जगी है
इस पगलाई दौड़ में, क्या न छुपा कुछ राज़?
छोड़ो भी महाराज।

क्वात्रोची पर चल नहीं सकता कोई केस
कुछ तो ठोस प्रमाण हो, कोई तो हो बेस
माना तोपों के सौदे मे था घोटाला
पर घोटाले के पीछे थे मोटे लाला
सकते में थी सीबीआई किसे पकड़ती
और कहाँ तक प्रत्यर्पण के लिए झगड़ती
क्या इस रिश्वत-काण्ड का, अब न खुलेगा राज़?
छोड़ो भी महाराज।

पीढ़ी-दर-पीढ़ी चला राजनीति का रोग
परिवारों में बँट रहा है सत्ता का भोग
नेता जी ने भाग्य, त्याग से जो पद पाया
पत्नी, पुत्र, पुत्रियों ने वह सहज कमाया
जब तक ज़िन्दा है कोई भी परिवारी जन
कैसे कोई ग़ैर लूट सकता नन्दन-वन
प्रजातन्त्र में क्या यही है जनता का राज?
छोड़ो भी महाराज।

जो जन-प्रतिनिधि देश के लाखों रहे डकार
वेतन भत्ता वृद्धि की उनको भी दरकार
खर्च करोड़ों कर जो लोग चुने जाते हैं
और मुफ्त में अनगिन सुविधाएँ पाते हैं
वे जब और-और की ख़ातिर शोर मचाते
तब कुछ सच्चे साधक भी बदनामी पाते
स्वयं भोगना चाहता, राजा पूरा राज!
छोड़ो भी महाराज!

बेईमानी कब रहा है बच्चों का खेल
बड़े-बड़े इस खेल में, पहुँच गए हैं जेल
पहले क़ैद काटते थे बस चोर, उचक्के
अब तो पूँजीपति, नेता भी हक्के-बक्के
क्या करोड़पति, क्या सांसद, क्या मन्त्री भाई
कानूनी-पंजे में सबकी शामत आई
क्या हर बेईमान पर गिर सकती है गाज़?
छोड़ो भी महाराज।

जीवन तो बस खेल है, कहते सन्त थरूर
खेल-खेल में हो गए, मन्त्री-पद से दूर
मौसम, महँगाई, अभाव सब झेल रहा है
भूखा तन भी, मन से किरकिट खेल रहा है
पूँजी, सट्टे, बल्ले की हो रही कमाई
अखबारों में अन्य ख़बर देती न दिखाई
शेष कहीं क्या मीडिया की आँखों में लाज?
छोड़ो भी महाराज।

मिला सूचना का हमें कानूनी अधिकार
नौकरशाही में न अब होगा भ्रष्टाचार
हर सवाल हल होगा, मिली आर.टी.आई
हमने भी अर्जी देकर ताक़त अज़माई
मुद्दत बीत गई पर मिला न कोई उत्तर
पूछताछ पर बाबू ने धमकाया कसकर
क़ानूनी अधिकार का, यह कैसा अंदाज़?
छोड़ो भी महाराज।

आज नहीं मुझसे बड़ा कवि हिन्दी में और
मंचों पर है आजकल बस मेरा ही दौर
हाथ कान पर रखकर जब मैं तान लगाता
भीमसेन, जसराजों के छक्के छुड़वाता
मैं चुटकले सुनाता हूँ अटपट बानी में
हरियाणवी तर्ज़ लिपटी राजस्थानी में
पर इससे क्या काव्य का होता नहीं अकाज?
छोड़ो भी महाराज।

नाम नहीं साहित्य का, ललित कलाएँ लुप्त
संस्कृति की सरिता हुई, सरस्वती-सी गुप्त
घर-घर में अवैध सम्बन्धों की गाथाएँ
परम्पराएँ ध्वस्त कर रहीं क्रूर-कथाएँ
बच्चों-बूढ़ों से बेहूदा नृत्य कराते
भौंडा हास्य, चुटकुले फूहड़ जी मिचलाते
दूरदर्शनी चैनलों से आए हम बाज
छोड़ो भी महाराज।

कविता को भाने लगा है मंचों का संग
गलेबाज अब ले उड़े गीत-ग़ज़ल के रंग
अब न मिलेगी पुस्तक में, या पण्डित के घर
कविता अब बिकती कवि-सम्मेलन-दूकान पर
कथ्य गौण है, ध्वस्त शिल्प का ताना-बाना
कविता अब चुटकुला हुई, या फिल्मी गाना
काव्य-सुधा विष बनेगी, था किसको अन्दाज़?
छोड़ो भी महाराज!

पढ़ने लिखने के लिए होते थे स्कूल
अब गुरुकुल में उग रहे राजनीति के शूल
छात्रसंघ का जलवा, निर्वाचन के छल-बल
निर्मल जल में शामिल हुआ दलों का दलदल
विद्यालय में पनप रहे अनचाहे नेता
सीप चुन रहे सागर से माणिक के क्रेता
भय है भँवरों में कहीं डूबे नहीं जहाज?
छोड़ो भी महाराज।

डिग्री पाने के लिए श्रम करना बेकार
सभी परीक्षाएँ हुई हैं केवल उपचार
नाले-मध्य कॉपियों का बण्डल गलता है
पेपर-लीक, नकल, प्रौक्सी सब कुछ चलता है
छात्र मैथ्स के जाँच रहे कॉपी ऐसे की
शिक्षा-मन्दिर में पसरी माया पैसे की
नष्ट-भ्रष्ट क्या इस तरह होता नहीं समाज?
छोड़ो भी महाराज।

अब न मनोरंजन कहीं मिलता सात्विक, स्वस्थ
दूरदर्शनी राह पर, दिल्ली है दूरस्थ
सपरिवार अब देखें कहो कौन-सा चैनल
कीचड़ उगल रहे हैं टी.वी. के सारे नल
हों अश्लील दृश्य, संवाद द्विअर्थी, फूहड़
तो दर्शक, विज्ञापन दोनों जाते हैं बढ़
दोषी हैं चैनल कि फिर दूषित हुआ समाज?
छोड़ो भी महाराज।

सन्दर्भ : दूरदर्शन पर अश्लीलता।

बीस-बीस धोनी प्रथम, टैस्टों में गम्भीर
कितनी उज्ज्वल हो उठी है अपनी तस्वीर
अभिनेता अमिताभ सदी का दीप्त सितारा
कब आँकेगा मूल्य, ग़रीब भूख का मारा
बाढ़, अकाल, अभाव, अशिक्षा सब बेमानी
खेलकूद, फिल्मों में भारत है लासानी
प्रगति, विकास, समृद्धि का यही अर्थ क्या आज?
छोड़ो भी महाराज।

खेल-खेल में हो रहा है अरबों का खेल
जानकार बतला रहे, तैयारी है फेल
कॉमनवैल्थ गेम्स से अपनी शान बढ़ेगी
माना, कुछ बेईमानी परवान चढ़ेगी
पूछताछ कर लेंगे, खेल निबट जाने दो
फिर वसूल कर लेंगे, पहले चट जाने दो
शर्म बेचने पर तुले खेलों के सरताज़?
छोड़ो भी महाराज।

दिल्ली लक-धक हो रही, चक-चक रेलम-पेल
काम-काज सब बन्द हैं, सिर्फ हो रहे खेल
चलो इंडिया, जय हो, खेलो-कूदो जीतो
होगा धनी देश, तुम सोना चाँदी लूटो
मेडल जीत रहे जो वही लाल हैं सच्चे
कूड़ा ही हैं कूड़ा बीन रहे जो बच्चे
क्या बस लक्ष्य यही कि हों खेलों में सरताज?
छोड़ो भी महाराज।

सन्दर्भ : अक्टूबर, 2010 में नई दिल्ली में हुए राष्ट्रमंडल खेलों पर।

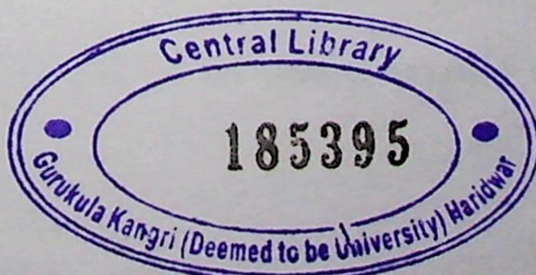
खेलगाँव सूना हुआ, हुआ समाप्त धमाल
सोना-चाँदी से हुए, बीसों मालामाल
भारत के खिलाड़ियों ने दमख़म दिखलाया
पदक-तालिका में भी स्थान दूसरा पाया
पर खेलों से पहले खेल जिन्होंने खेला
उन्हें झेलना है अब कड़ी जाँच का रेला
'खेल ख़त्म, पैसा हज़म' क्या न चलेगा आज?
छोड़ो भी महाराज।

सन्दर्भ : दिल्ली मे 19वें राष्ट्रमंडल खेलों पर।

व्यर्थ जा रहीं कोशिशें मेहनत भागमभाग
बुझने में आती नहीं, तेल डिपो की आग
किससे चूक हुई, धधकी जयपुर की ज्वाला
कहाँ सुरक्षा में है ऐसा गड़बड़झाला
ऐसी ही चौकसी अगर शस्त्रागारों की
तो क्या गारंटी है अणु के भंडारों की
क्या कोई सुनता नहीं ख़तरे की आवाज़?
छोड़ो भी महाराज।

सन्दर्भ : नवम्बर, 2009 में जयपुर की तेल डिपों में लगी आग पर।

वह अफ़गानिस्तान हो, या फिर पाकिस्तान
तालिबान को चाहिए, एक सुरक्षित स्थान
तालिबान का साथी आतंकी ओसामा
पूरी तरह न बात समझते क्यों ओबामा
दो नावों में बैठ पाक बन रहा सयाना
उमर, पाक, ओसामा, सब का एक निशाना
दो मुँह, सौ बातें करें, आए तनिक न लाज?
छोड़ो भी महाराज।



एक फिल्म को मिल गए, पुरस्कार दो चार
उसके ही गुण गा उठे, सब के सब अखबार
प्रथम पृष्ठ पर एक मात्र बस एक ख़बर है
झूम रहा है देश, मिला धरती-अम्बर है
अब न कहीं कोई चिन्ता, कोई न समस्या
फिल्मी पर्दे पर ही निबट गया हर मुद्दा
मिला एक 'स्लमडॉग' को, क्या पृथ्वी का ताज़?
छोड़ो भी महाराज।

सन्दर्भ : फिल्म, 'स्लमडॉग' को संगीत आदि पर मिले पुरस्कार

हो सकता है पाक का हो नागरिक कसाब
हमने तो इसका कभी रक्खा नहीं हिसाब
लाखों पाक नागरिक हैं कट्टर आतंकी
कैसे रख सकते हम उनकी सूची पक्की
जो भी हो, पर इतनी बात ज़रूर कहेंगे
अपने आतंकी को सज़ा न देने देंगे
गिरगिट-सा रँग बदलते, आती उन्हें न लाज?
छोड़ो भी महाराज।

संदर्भ : कसाब के संबंध में पाकिस्तान का बयान

हुआ राम के हाथ से, रावण का संहार
पर आसुरी प्रवृत्ति को, सका न कोई मार
कुछ भी होता हो सतयुग, त्रेता, द्वापर में
धर्म, नीति सब मौन किन्तु कलियुग के घर में
बहुत अल्प हैं राम, रावणों का बहुमत है
परिवेशों में सुधा शून्य, विष शत-प्रतिशत है
क्या कल को दोहरा नहीं सकता कोई आज?
छोड़ो भी महाराज।

अपने बिल में बैठ कर चूहा रहा दहाड़
मैं अवश्य ही देश का कर दूँगा दो फाड़
वरना तुम यह मानो महाराष्ट्र है मेरा
और मुम्बई है मेरा पुश्तैनी डेरा
बाहर वाले भुगतेंगे बेहाल नतीजा
यहाँ करेंगे राज सिर्फ हम चचा-भतीजा
क्या ऐसे सिरफिरों का कोई नहीं इलाज?
छोड़ो भी महाराज।

सन्दर्भ–राज ठाकरे द्वारा दिए गए वक्तव्य पर।

संविधान-कानून को रहे ठोकरें मार
शुरू किया ठाकरों ने ठोकर का व्यापार
महाराष्ट्र मेरा, मुम्बई बाप की मेरी
दोनों फूँक रहे अपनी-अपनी रणभेरी
हम सपूत हैं माँ को टुकड़ों में बाँटेंगे
भारत की साँझा-संस्कृति की जड़ काटेंगे
कौन है बड़ा सूरमा, उद्धव या फिर राज?
छोड़ो भी महाराज।

यूपी और बिहार में आई भीषण बाढ़
भ्रष्टाचरणी-दैत्य की खुजलाई है दाढ़
केन्द्र और राज्यों में धन आएगा भारी
दान और चन्दों की होगी मारामारी
जिनको कुदरत मार रही उनको मरना है
तय है कुछ बेईमानों का घर भरना है
कोई भी सुनता नहीं, क्या सच की आवाज़?
छोड़ो भी महाराज।

जीत गई विश्वास-मत यूपीए सरकार
शत्रु-मित्र की मंडली बैठ गई मनमार
राजनीति में कोई नहीं किसी का भाई
कब हो जाए प्रीति, और कब छिड़े लड़ाई
कल तक जिन्हें सलाम किया, अब देते गाली
संसद-मन्दिर में नोटों की राशि उछाली
उठापटक से सधेगा जनहित का कुछ काज?
छोड़ो भी महाराज।

बढ़ते चढ़ते जा रहे हैं तेलों के दाम
तय है जन सामान्य का होगा काम तमाम
आम आदमी कैसे अपना काम चलाए
पेट सिकुड़ने लगे, हो चले वस्त्र पराये
बेलगाम हैं ये महँगाई के सौदागर
इन्हें ख़ुदा का ख़ौफ़ न दुनियादारी का डर
क्या न सज़ा देगा इन्हें कोई राज, समाज?
छोड़ो भी महाराज।

सब चीजें महँगी हुईं, जीना हुआ मुहाल
पर पैसों का खेल है, मन्दी से बेहाल
तेल बहुत सस्ता है, किन्तु खरीदें कैसे
अब धन्ना सेठों के पास नहीं हैं पैसे
कोई बतलाए तो यह कैसी मन्दी है
या यह विकसित देशों की नाकेबन्दी है
हो न कहीं यह अन्ततः काले धन का राज?
छोड़ो भी महाराज।

लो फिर से महँगा हुआ डीजल औ' पेट्रोल
इनके दाम बढ़े, बढ़ा सब चीजों का मोल
कहा आडवाणी ने, मूल्य न बढ़ने देंगे
सड़कों पर संघर्ष, सदन में शोर करेंगे
मनमोहन सिंह बोले राज जब तुम्हारा था
मूल्यों में तुमने भी तो छक्का मारा था
वाक्‌युद्ध से सरेगा, जनता का क्या काज?
छोड़ो भी महाराज।

खाद्य-पदार्थों की कमी के कारण दो-तीन
पर उनमें सबसे प्रमुख हैं भारत औ' चीन
लोग यहाँ के पहले से ज़्यादा खाते हैं
अपने घर की उपज स्वयं चट कर जाते हैं
विकसित देशों की मंडी इनकी आबादी
पर किसने दी खाने-पीने की आज़ादी?
कोंडालीजा के कथन में बोलो क्या राज़?
छोड़ो भी महाराज।

सन्दर्भ : अमेरिकी विदेश मन्त्री कोंडालीजाराइस का विश्व में खाद्यान्न की कमी पर यह कथन कि भारत व चीन के लोग अधिक खाने लगे हैं। यही कमी का प्रमुख कारण है।

हर उस खोटे माल का होता बहुत प्रचार
जिसके हैं बाज़ार में ग्राहक बस दो-चार
अच्छा क्या है और बुरा क्या समझ न आया
विज्ञापन की माया ने ऐसा उलझाया
एक्टर तेल लगाते, सोना-चाँदी खाते
और खिलाड़ी सब के घर पक्के बनवाते
क्या जनता से छुपा है असल-नकल का राज़?
छोड़ो भी महाराज।

गाँठों में उलझी हुई, गठबन्धन सरकार
नौकरशाही कर रही, जनहित का व्यापार
जो जनता के पैसे से वेतन पाते हैं
वे नौकर मालिक को अक्सर धमकाते हैं
चपरासी, बाबू साहब, जनपद-अधिकारी
समझ रहे हैं खुद को पैतृक-सत्ताधारी
शेष नहीं क्या शील, भय, लज्जा, लोक-लिहाज?
छोड़ो भी महाराज।

आरक्षण की आग से लहक उठा विध्वंस
सेंक रहे हैं रोटियाँ राजनीति के कंस
अँगरेजों ने राज किया था फूट डालकर
आज भी वही नीति डस रही है बन विषधर
कुर्सी की ख़ातिर राजा ले आए मंडल
फिर उसके विरोध में सक्रिय हुआ कमंडल
कब तक होता रहेगा खंडित त्रस्त समाज?
छोड़ो भी महाराज।

अमरीका के साथ यह कैसा हुआ करार
पूरा करने में जिसे डोल उठी सरकार
दोस्त हो गए दुश्मन, दुश्मन दोस्त हो गए
मैत्री गठबन्धन के सब सिद्धान्त खो गए
कड़े करात पड़े, तो कोमल हुए मुलायम
अब अनुकूल हुआ है अणु-करार का मौसम
जोड़तोड़ से चलेगा कितने दिन यह राज?
छोड़ो भी महाराज।

सोच समझकर छोड़ते जो शब्दों के तीर
समझे जाते हैं वही, भाषण-रण के वीर
लक्ष्य-भेद में सफल हो गए, तो पौबारा
चूक गए तो बोल उठे, मैंने कब मारा
भरी सभा में कहकर बात मुकर जाते जो
कुशल राजनेता कहलाते हैं वे ही तो
तो क्या देश चला रहे झूठों के सरताज?
छोड़ो भी महाराज।

नौकरशाहों पर हुई मेहरबान सरकार
खोल दिया उनके लिए राजकोष का द्वार
उनको निजी क्षेत्र के आसपास लाना है
और चुनावी गणित भी उन्हें समझाना है
चालिस प्रतिशत बढ़ा मिलेगा उनको वेतन
और देश के चालिस प्रतिशत जन अति निर्धन
चालीस के आँकड़े का, है क्या कोई राज़?
छोड़ो भी महाराज।

हॉट सिटी अपना रहे अजब तरीके तौर
चालू है चारों तरफ लूटमार का दौर
भरी दुपहरी में हो रही डकैती चोरी
प्रतिदिन झपटे जाते पर्स, चेन बरजोरी
रोज़ाना दो चार क़त्ल तो आम बात है
रोक सके अपहरण, यहाँ किसकी बिसात है
क्या इन नगरों पर नहीं रहा किसी का राज?
छोड़ो भी महाराज।

रोज़-रोज़ होता नहीं होली का हुड़दंग
कुछ मस्ती भी चाहिए, हो भँगड़ा या भंग
सुना गली में शोर, लपक कर खिड़की खोली
गोली खेल रही थी लाल खून से होली
पुलिस कह रही थी यह आपस का झगड़ा है
लाल रंग या रक्त, एक-सा ही पचड़ा है
यह कैसा बदला हुआ रंगों का अन्दाज़?
छोड़ो भी महाराज।



दिल्ली आने के लिए तय हैं कुछ प्रतिमान
विश्वसनीय प्रमाण दे, सिद्ध करो पहचान
जो देखो दिल्ली में यूँ ही घुस आता है
और यहीं फिर जोड़-तोड़ कर बस जाता है
बढ़ती आबादी का कैसे बोझ उठाए
दिल्ली के दिल में कैसे कुल देश समाए
पर क्या भारत से अलग, है दिल्ली का राज?
छोड़ो भी महाराज।

सन्दर्भ : दिल्ली में प्रवेश पर

बिजली पानी के लिए भीषण हाहाकार
ऊपर से बेभाव है, महँगाई की मार
चन्द दायरों में सिमटीं सब सुख-सुविधाएँ
शेष घरों में दीपक तक न टिमटिमा पाएँ
साहूकार साँस का करता रोज तगादे
और किए जाते हम झूठे-सच्चे वादे
क्या इस विषम विषाद का कोई नहीं इलाज?
छोड़ो भी महाराज।

चाहें तो आतंक-कुल कर सकते हम ध्वस्त
नीति और सिद्धान्त के सम्मुख हैं पर पस्त
वे कहते पापी को नहीं, पाप को मारो
आतंकी भी मानव ही हैं, यह न बिसारो
इसीलिए हर आतंकी हम छोड़ रहे हैं
हाथ-पैर आतंकवाद के तोड़ रहे हैं
हो पाएगा इस तरह क्या भयमुक्त समाज?
छोड़ो भी महाराज।

जहाँ-जहाँ पर भी गए भारतीय श्रमवीर
सौंप दिए उस देश को ही मन-प्राण-शरीर
उस विदेश को अपना देश समझ अपनाया
खून-पसीने से उस भू को चमन बनाया
अब तुम उनके हक़ पर भी अधिकार जताते
भूमिपुत्र बन, उनको गिरमिटिया ठहराते
ऐसे आँख तरेरते, आती तुम्हें न लाज?
छोड़ो भी महाराज।

सन्दर्भ : पहले फिज़ी और फिर मलेशिया में भारतीयों के प्रति दुर्व्यवहार पर।

हमने वादा किया था सदा रहेंगे साथ
और न छोड़ेंगे कभी बीच धार में हाथ
हमने तो निष्ठा से अपना धर्म निभाया
तुमने समझौते पर हमको धता बताया
अब यदि पश्चिम-राग तुम्हारे संग हम गाएँ
फिर अपने वोटर को हम क्या मुँह दिखलाएँ
पर फिर कैसे चलेगा पाँच वर्ष तक राज?
छोड़ो भी महाराज।

आए थे इस देश में सौदागर दो चार
दया-दृष्टि से शाह की, शुरू किया व्यापार
फिर कुछ अपने छल, कुछ गद्दारों के बल पर
याचक उग्र हुए, हथिया बैठे पूरा घर
लूट, ज़ुल्म में जिनने नए रिकार्ड बनाए
तुम उनकी प्रशस्ति में शिलालेख ले आए
ज़ालिम के गुणगान में आती तुम्हें न लाज?
छोड़ो भी महाराज।

अमरीका से हो रहा ऐसा एक क़रार
जिसके कारण छिड़ गई दोस्तों में तक़रार
कहती है सरकार कि इसमें लाभ बड़े हैं
वे कहते ख़तरे 'हाइड' में छुपे पड़े हैं
दोनों ओर चल रही है ताक़त-अज़माई
हानि-लाभ की नहीं, मूँछ की शुद्ध लड़ाई
गठबन्धन सरकार का यह कैसा अन्दाज़?
छोड़ो भी महाराज।

उद्योगों की लिस्ट में आया एक सुयोग
ट्रांसफर-पोस्टिंग भी बना एक बड़ा उद्योग
जहाँ और जितने दिन रहना हो बतलाओ
जितना भी गुड़ डालो, उतना मीठा पाओ
होगी तुमको छूट, टूट कर करो कमाई
जनता को दे छाछ, उड़ाओ दूध-मलाई
आती है नेपथ्य से आहों की आवाज़
छोड़ो भी महाराज।

दो बन्धक मारे गए, तीन रहे हम छोड़
फिर समझाते हैं तुम्हें, करो न हमसे होड़
पहले तय कर लो हम से कैसे निबटोगे
चारा डालोगे या दो-दो हाथ करोगे
कहते हो तुम हमें नक्सली, माओवादी
ख़ुद हो टालू चालू राजकाज के आदी
इन चुनौतियों से उन्हें, आती कभी न लाज?
छोड़ो भी महाराज।

सन्दर्भ : नक्सलियों द्वारा अपहृत व्यक्तियों का वध करने तथा कुछ को मुक्त करने पर।

आती है हर साल ही कुछ नदियों में बाढ़
खुजलाती हर साल ही, भ्रष्टाचारी दाढ़
राहत को बरसेंगे फिर सरकारी पैसे
और वायदे भी होंगे गत वर्षों जैसे
आसमान से टपकी, पर खजूर में अटकी
कितने झटके खाती है राहत की मटकी
क्या इस लूट-खसोट का कोई नहीं इलाज़?
छोड़ो भी महाराज।

रेल-हादसे हो रहे महिने में दो चार
माओवादी, नक्सली भी कर रहे प्रहार
शासन बोला, 'लो सतर्कता और बढ़ाई
मुआवज़े की राशि, घोषणा में बरसाई'
ममता कहतीं मैं पहले तो बंगाली हूँ
तब फिर रेल-वेल या देश-वेश वाली हूँ
क्या इस सब से हो रहा जन का नहीं अकाज?
छोड़ो भी महाराज।

दुष्कर्मों का, पाप का चुकता हुआ हिसाब
फाँसी से कम और क्या पाता सज़ा कसाब
नृशंसता, निर्ममता की हर सीमा छू ली
निर्दोषों को काटा जैसे गाजर-मूली
दौलत, मज़हब, राजनीति ने यूँ बहकाया
मानव होकर भी दानव का धर्म निभाया
सनक और उन्माद का यह कैसा अन्दाज़?
छोड़ो भी महाराज।

माओवादी, नक्सली, आतंकी खूँखार
सच है, किन्तु उचित नहीं अभी हवाई मार
ये भी अपने हैं, इनको हम समझाएँगे
कड़ी कार्रवाई का भय भी दिखलाएँगे
पर यदि ये कुछ अन्य उपद्रव और करेंगे
तब तो हम निश्चित ही इनके पर कतरेंगे
गीदड़-भभकी दे रहे, आती इन्हें न लाज?
छोड़ो भी महाराज।

एक लाख रिश्वत मिली मुझको पहली बार
शीघ्र छुपा दो बन्द कर प्रिय सब खिड़की-द्वार
क्या होगा लेकर रिश्वत के इतने पैसे
हम भी बिगड़ेंगे प्रिय भ्रष्ट अफसरों जैसे
देखो, रोज़ बढ़ रही है इतनी महँगाई
कल आएगी काम, यही बदनाम कमाई
नष्ट, भ्रष्ट क्यों हो रहे, कल के भय से आज?
छोड़ो भी महाराज।

फिर वार्ता करने चले भारत-पाकिस्तान
मुद्दों पर अटकी हुई है दोनों की आन
हम पहले आतंकवाद पर बात करेंगे
समझो तो, इससे आतंकी कहाँ डरेंगे
बेहतर होगा, बात करें हम काश्मीर पर
शान्ति-बहाली को दें एक और शुभ-अवसर
बहलाएँगे कब तलक, बहुरूपिए अन्दाज़?
छोड़ो भी महाराज।

भारत का सर्वोच्च है मान, पद्म-सम्मान
पात्रों को जाता किया जो प्रतिवर्ष प्रदान
वैज्ञानिक, संगीत और साहित्य-प्रणेता
खेल, कला, उद्योग और फिल्मी अभिनेता
पद्म-पुरस्कृत होना तो है गौरव भारी
कुछ सुपात्र भी पा न सकें, यह है लाचारी
क्या इनका वितरण सदा होता है निर्व्याज?
छोड़ो भी महाराज।

तेलंगाना के लिए दे देंगे हम जान
वरना पृथक् प्रदेश का करो शीघ्र ऐलान
अलग राज्य में होंगे हम ही चीफ-मिनिस्टर
भारत के टुकड़े-टुकड़े हों, हम को क्या डर
हम तो हैं तैयार, मगर अड़चनें कई हैं
अलगा-अलगी की माँगें नित नई-नई हैं
निज हित में बलि देश की, आती उन्हें न लाज?
छोड़ो भी महाराज।

ऐसा होना चाहिए मेरा देश महान
जहाँ न सिक्कों से तुले कुर्सी का ईमान
सब को रोटी मिले, सभी बारोज़गार हों
हों शिक्षित, निरोग तन, मन में सद्‌विचार हों
काला धन सफेद हो, लौटे चाँदी सोना
जो कर सकते, कहते वही चाहिए होना
छुरी बगल में, राम मुख, यह कैसा अन्दाज़?
छोड़ो भी महाराज।

आओ बतलाएँ तुम्हें संसद के कुछ हाल
अपशब्दों के साथ अब ठोके जाते ताल
बाहर जिनकी फ़ितरत में है दादागीरी
अन्दर कैसे भाये उनको रूप-फ़कीरी
चलो प्रशिक्षण-संस्थान ऐसे खुलवाएँ
संसदीय-आचारों के जो पाठ पढ़ाएँ
क्या सीखेगा राजमद, नीति धर्म के काज?
छोड़ो भी महाराज।

अमरीका समझा रहा, सुनो मित्रवर चीन
छोड़ो अब मध्यस्थता की तुम भी मृदु बीन
महाशक्ति हो, समझो अपनी जिम्मेदारी
हर ताक़तवर को लाज़िम है थानेदारी
भारत और पाक लड़ते रहते हैं अक्सर
मौक़ा ताड़ो और करो सींगों को अन्दर
मित्रभाव से वैर का यह कैसा अन्दाज़?
छोड़ो भी महाराज।

मन्त्री होटल में रहें अब न रहा स्वीकार्य
एकोनोमी क्लास में सफ़र हुआ अनिवार्य
मन्त्री कैटल क्लास में चलें, है नादानी
परजा की ख़ातिर, राजा क्यों दे क़ुरबानी
झुग्गी में रहकर शासन क्या खाक़ करेंगे
हम अपनी जेबों से शाही खर्च भरेंगे
धन-पशुओं का राज ही, क्या जनता का राज?
छोड़ो भी महाराज।

प्रति पल होते जा रहे नूतन आविष्कार
और बदलता जा रहा मानव का व्यवहार
कोशिश होती क़ुदरत पर क़ाबू पाने की
अपनी क़ब्र खोदकर उस पर इतराने की
अनुसन्धानों की यह कैसी है लाचारी
नई दवा के पीछे और नई बीमारी
ध्वंस प्रकृति का देख, क्या कुपित हुए यमराज?
छोड़ो भी महाराज।

कानूनी दरबार ने तोड़ दिया प्रतिबन्ध
लो वैधानिक हो गया समलैंगिक सम्बन्ध
पुरुष पुरुष की पत्नी हो सकता है भाई
महिला महिला की हो सकती सहज लुगाई
ईश्वर और प्रकृति ने थे जो नियम बनाए
छद्म-प्रगति के दीवानों को रास न आए
उच्छृंखलता की हदें टूट रहीं क्या आज?
छोड़ो भी महाराज।

साठ हजार करोड़ का कर्ज़ कर दिया माफ
यूपीए सरकार का उठा न फिर भी ग्राफ
कर्ज़ों की माफ़ी से कोष हो गया खाली
महँगाई से त्रस्त हुई घर-घर घरवाली
कर्ज़ माफ करने वालों का बोझ बढ़ गया
हर भारतवासी के सिर पर कर्ज़ चढ़ गया
कल की बदहाली नहीं समझ रहा क्या आज?
छोड़ो भी महाराज।

अब इराक़ हो, पाक या बर्मा, बंग्लादेश
हिंसा ताण्डव कर रही बदल-बदल कर भेष
लोकतन्त्र को जब-जब ध्वंस किया जाता है
अपनी ही जनता का रक्त पिया जाता है
तानाशाही घोड़े पर जब चढ़ जाते हैं
प्रतिवेशी देशों को आँखें दिखलाते हैं
क्या न रास आया इन्हें स्वतन्त्रता का साज?
छोड़ो भी महाराज।

सन्दर्भ : पड़ोसी मुल्कों में सरकारों की तानाशाही पर।

मैं दल-बदलू दलों को जोड़ूँ या दूँ तोड़
जब चाहूँ सरकार की, रख दूँ बाँह मरोड़
झारखंड, हरियाणा, गोआ या कर्नाटक
सभी जगह चलता मेरे दम से ही नाटक
चुनती है हर बार मुझे ही जनता भोली
मैं हूँ माल बिकाऊ, आप लगाओ बोली
क्या न लुटे इस कृत्य से, लोकतन्त्र की लाज?
छोड़ो भी महाराज।

जब कहने पर आए गए सत्य कथा जसवंत
हुआ भाजपा से तभी सम्बन्धों का अन्त
जिन्ना की तारीफ़ कर चुके हैं अडवाणी
और कई नेताओं की भी बदली वाणी
राजनीति की हार-जीत में आए वो क्षण
आज राम के आसन पर है, कल का रावण
मुसलिम वोटों के लिए, बदले क्या सुर आज?
छोड़ो भी महाराज।

प्रतिदन ब्लू लाइन बसें मार रहीं दो-चार
इस पर इतना शोरगुल क्यों करते हो यार
बन्धु इस विषय में अपना तो यह दृढ़ मत है
बस तो बस माध्यम है, मृत्यु-दिवस निश्चित है
हम पहले विकल्प खोजेंगे, फिर घोटाले
पर पैदल चलना तो सीखें दिल्ली वाले
कुशल-प्रशासन का भला यह कैसा अन्दाज़?
छोड़ो भी महाराज।

अर्थसिद्धि के साथ ही होता धर्म-प्रचार
हम व्यापारी ख़ून के, करते नर-संहार
सम्मुख होकर ललकारें, फिर करें लड़ाई
यह बेहूदा हरक़त हमको रास न आई
जो निरीह, निर्दोष, बेख़बर, बेचारे हैं
हमने तो वे जन ही धोखे से मारे हैं
क्या पृथ्वी पर आ गया, सचमुच दानव-राज?
छोड़ो भी महाराज।

चुनावी-षट्पदियाँ

आज़ादी की ख़ातिर नख तक नहीं कटाए
अँग्रेजों को पूज रायसाहब कहलाए
वे राजा महाराजा सारे ख़त्म हो गए
भोग-विलास, ऐश के सब अरमान सो गए
पर कल के शोषक फिर चुने जाएँगे शासक
खरी कहत कविराय, न समझो कोरी बक-बक

है सिर पर चुनाव आवश्यक हैं कुछ गुंडे
पर जाने छुप गए कहाँ सारे मुस्टंडे
लगता है सब क़त्ल अपहरण करने वाले
विरोधियों ने पहले से ही बुक कर डाले
गुंडों के बिन राजनीति की दादागीरी
नहीं चलेगी, सोलह आने बात है खरी

धर्मयुद्ध यह नहीं, देश का निर्वाचन है
नीति दिखाने भर को है, अनीति गोपन है
शुरू हुई पर्चा भरते ही मारामारी
राजनीति में जायज़ सब यारी-अय्यारी
लोकतन्त्र की लाज लुटे, या हो रुसवाई
जंग जीतने का है धर्म, मात्र चतुराई

कल मैं काँग्रेसी था, आज भाजपाई हूँ
दल का भक्त नहीं, कुर्सी का शैदाई हूँ
कल को सपा, लोजपा या बसपा में जाऊँ
मत करना आश्चर्य अगर निर्दली कहाऊँ
मुझको तो चुनाव लड़ना, नेता बनना है
एक कपूत और भारत माँ को जनना है

जो जनमत की धार की ले न सके थे थाह
निर्वाचन की नदी में डूबे वे मल्लाह
तोड़ पुराने गठबन्धन जो बाहर आए
वे जनता का निर्णय सुन रोए पछताए
कुछ ने कहा कि बाँह न कभी अब उमेठेंगे
कुछ अकड़ू बोले हम विपक्ष में बैठेंगे

राजनीति के मद में कुछ ऐसे मदमाते
जन-गण-मन का बड़े प्रेम से भोग लगाते
बाहुबली पशु क्रूर अनैतिकता के आदी
हर दल में हैं ऐसे कुछ नेता अपराधी
जब ये घुस जाते विधायिकाओं, संसद में
जनहित का तर्पण करते सत्ता के मद में

कहा वरुण ने कटवा दूँगा हाथ पैर सर
लालू बोले हम चलवा दूँगा बुलडोजर
देने लगीं राबड़ी देवी खुलकर गाली
राजनीति पर छाई है चुनाव की लाली
धमकी है, गाली-गलौच है, भितरघात है
आज कहा, कल मुकर गए, यह आम बात है

वोट माँगने आ गए नेता बदलू लाल
नौ दिन में दस दल बदल इनने किया कमाल
बदलू जी, बतलाओ अब तुम किस दल में हो
किसी एक दल में कि दलों के दलदल में हो
वोट तुम्हीं को देंगे, पर दो यह गारंटी
जीत गए तो फिर न कभी मारोगे पल्टी

अडवाणी कहते लगाम शासन के रथ की
मनमोहन की मुरली, धुन है दस जनपथ की
कहें सोनिया दास संघ के हैं अडवानी
लालू और करात बोलते अटपट बानी
सारे नेता जनता को हैं मूर्ख बनाते
अपने गुण गाते, औरों को धूर्त बताते

जब से वीर भुजंग ने दी है पार्टी छोड़
खोज रहा है दल विकल, तब से उनका तोड़
उन जैसा दबंग, क़ातिल, शातिर अपराधी
चलवा सकता जो नोटों-वोटों की आँधी
ऐसा नेता ही अब दल की लाज बचाए
खुद मन्त्री बन, हमें मुख्यमन्त्री बनवाए

नाहक हार-जीत के पचड़े में पड़ना है
अब तो गठबन्धन में ही चुनाव लड़ना है
किस से बाँधे गाँठ, समझ में यही न आता
हर दल और अधिक सीटों की माँग उठाता
कैसे तय हो किसके खाते कितनी सीटें
बँटवारे के चक्कर में कितना सिर पीटें

पाँच साल के बाद हुई फिर पूछ तुम्हारी
मतदाताओ, चूक न जाना अब की बारी
पाँच वर्ष में एक बार जो रिरियाते हैं
कुर्सी मिलते ही फिर आँखें दिखलाते हैं
ऐसे नेताओं को चुनना नादानी है
दिखला दो जन-गंगा में कितना पानी है।

काँग्रेस में बचपन और जवानी काटी
पाँच इलैक्शन लड़े, कभी भी धूलि न चाटी
अब बूढ़ा बतला कर मेरा किया सफाया
कल के लौंडे के हाथों में टिकट थमाया
अब दल बदल करूंगा मैं, चुनाव जीतूंगा
जिन्हें दोस्त कहता था, उनको गाली दूंगा

मतदाताओ समझो, दुनिया को समझाओ
अपना भला चाहते हो तो हमें जिताओ
हर चुनाव में हम ही तो लड़ते आए हैं
सदियों से जनसेवा में सड़ते आए हैं
जिनके पास न धनबल है, न बाहुबल भाई
उन कंगालों से होगी क्या ख़ाक भलाई

बल सदैव जीता, निर्बल ने बाज़ी हारी
क्यों यह बात समझ में आती है न तुम्हारी
देश-वेश की बातें तो मातमपुरसी है
असली देशभक्ति तो सत्ता है, कुर्सी है
सच्चे देशभक्त हैं हम, तुम हमें वोट दो
बदले में चाहो तो आसव पियो, नोट लो

दो रुपयों में एक किलो चावल पाना है
तो ग़रीब वोटरों, मुझे ही जितवाना है
बस मैं ही हमदर्द थके-हारे लोगों का
भाग्यविधाता, क़िस्मत के मारे लोगों का
सांसद बन कर दुख-दारिद्र्य सब मिटाऊंगा
हर पाँचवें वर्ष मैं सेवा में आऊंगा

इसी शहर में खाया-खेला बड़ा हुआ हूँ
बन्धु, यहीं से मैं चुनाव में खड़ा हुआ हूँ
सारे शहरी हिन्दू मुसलिम सिख ईसाई
कुछ दिन से लगते हैं मुझको अपने भाई
द्वार तुम्हारे आएंगे तो कई भिखारी
अपने को भी तो अज़माओ अब की बारी

राजकाज से वंचित है आधी आबादी
महिलाओं को मिली नहीं पूरी आज़ादी
हर दल कहता हम नारी की पीर हरेंगे
महिला-आरक्षण बिल निश्चित पास करेंगे
पर जब-जब चुनाव लड़ने के अवसर आते
क्यों न उन्हें तुम एक तिहाई टिकट थमाते

मत देखो अतीत, धन्धे पर भी मत जाओ
अफ़वाहें सुन अपराधी न मुझे ठहराओ
यूँ ही बस दो-चार जुर्म हो गए खेल में
नेताओं की तरह रहा कुछ बरस जेल में
अब तो जन-सेवक हूँ, सेवा सदा करूंगा
संसद के गलियारों में हक़ अदा करूंगा

लो मतदान शुरू हुआ, खून-खराबे बीच
मतकेन्द्रों को नक्सली, रहे रक्त से सींच
कड़ी सुरक्षा के सब दावों को झुठलाते
मतदाताओं की लाशों पर लाश गिराते
लोकतन्त्र का अश्वमेध कितनी बलि लेगा
पूर्णाहुति के बाद, न जाने क्या फल देगा

ज़्यादातर प्रत्याशी झूठे वादे करते
आज कही बातों से कल हैं साफ़ मुकरते
जब चुनाव आता, तो जन-सेवक बन जाते
सत्ता मिलते ही कुर्सी का रौब दिखाते
राजनीति में देखकर, स्वार्थों का संदोह
निर्वाचन से घट रहा, मतदाता का मोह

मन करता है स्वच्छ-छवि वाले को दें वोट
किन्तु कहाँ वह छवि जहाँ मिले न कोई खोट
धन-पशु पैसे के बल पर वोटर पटियाते
बाहुबली खुलकर अपने भुजदण्ड दिखाते
बिरादरी वाले पुरखों की शपथ दिलाएँ
कहो स्वच्छ छवि वाले लोग कहाँ से लाएँ

जीत हमारी होगी, पर बहुमत न मिलेगा
सत्ता की ख़ातिर फिर तो गठबन्ध चलेगा
नहीं किसी दल से परहेज कुर्सी की खातिर
राजनीति ने हमको बना दिया है शातिर
हम चुनाव में थर्ड मोरचा बन उतरेंगे
पर विजयी दल का ही अन्तिम वरण करेंगे

निर्धन मतदाताओं से बस वोट चाहिए
और अमीरों से वोटो सँग नोट चाहिए
तन पर नकली विनम्रता का कोट चाहिए
वाणी में मिठास, मन में सौ खोट चाहिए
चारों ओर लठैतों की भी ओट चाहिए
विरोधियों पर परमेश्वर की चोट चाहिए

यदि तुम अपने मत का नहीं प्रयोग करोगे
फिर कैसे आचरणों का आदर्श वरोगे
वोट न देना कायरता है, नादानी है
जनमत कम, तो लोकतन्त्र ही बेमानी है
अतः उठो, अपने मत का हथियार उठाओ
और सही प्रतिनिधि को संसद में पहुँचाओ

तुम कहते हो हम जीतेंगे, यह निश्चित है
लगता तुम्हें, तुम्हारे ही हक़ में बहुमत है
पर तुममें ऐसा क्या है, यह तो बतलाओ
अपने कर्मों का कच्चा चिट्ठा दिखलाओ
कितनी की है जनता और देश की सेवा
या फिर लूट-मार कर ख़ुद खाई है मेवा

कल तक जिसके नाम से थर्राता था गाँव
हाथ जोड़ कर छू रहा, वही आजकल पाँव
कलुआ कहकर बात-बात पर देता गाली
आदर से कहता कालीप्रसाद चाचाजी
चमक रहे हम भी चुनाव की चाँद-रात में
कल तो फिर आना ही है अपनी बिसात में

तुम पर फिँका न अबतक कोई जूता-चप्पल
नेता का तो यही आजकल सच्चा सिम्बल
सिम्बल पाने की ख़ातिर कुछ तो करवाओ
खुद अपने प्रयास से ही चप्पल चलवाओ
जूते-चप्पल की महिमा जल्दी पहचानो
जंग जीतना है, तो मेरा कहना मानो

आज खुशामद करवा लो तुम कालू भैया
कल से तो फिर तुम्हीं करोगे ताता-थैया
मैं हूँ सच्चा सेवक आज और तुम स्वामी
मैं हूँ भक्त, और तुम ईश्वर अन्तर्यामी
कल से यह उल्टी गंगा फिर बहे, ना बहे
स्वामी सेवक का यह रिश्ता रहे, ना रहे

कुछ चुनाव की गरमी, कुछ मौसम की गरमी
ऊपर से बिजली पानी की यह बेशरमी
प्रत्याशी जनता से सुख के वादे करते
झूठ पाप है, नेता कहाँ पाप से डरते?
जब चुनाव के मध्य जा रहा यह दुख भोगा
सोच रहे कविराय, बाद में फिर क्या होगा

सब चीजें महँगी हुईं जीना हुआ मुहाल
पर पैसों का खेल है मन्दी से बेहाल
तेल बहुत सस्ता है, किन्तु खरीदें कैसे
अब धन्ना सेठों के पास नहीं हैं पैसे
कोई तो बतलाए, यह कैसी मन्दी है
या यह अगले चुनाव की नाकेबन्दी है

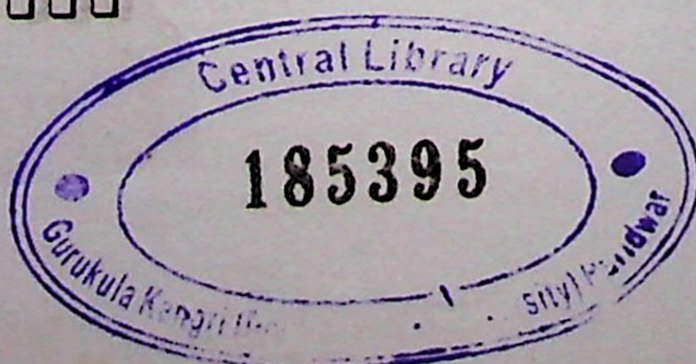
सिर्फ हमारी नीयत में खोजे जाते खोट
जबकि सभी को चाहिए नोट, वोट, अखरोट
नोट तभी मिलते जब हों कुछ धन्धे काले
हेराफेरी, चोरी, हुंडी और हवाले
जिस पर धन जन बल है, वोट वही दिलवाता
बदले में हमसे थोड़ा संरक्षण पाता

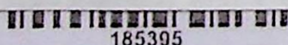
सारी उमर भाजपा की आरती उतारी
अब की बार उसी ने मुझको टँगड़ी मारी
कुर्सी नहीं मिली तो क्या मैं घास चरूंगा
दृढ़ निश्चय कर लिया कि अब दल बदल करूंगा
देगा जो भी टिकट उसी दल में जाऊंगा।
खरी बात है, अब उसके ही गुण गाऊंगा।

लोकतन्त्र में कैसे जन विश्वास कर सके
वोट उसे देना है जो कि विकास कर सके
धर्म, जाति, या सम्प्रदाय के तीखे नारे
अब न फलेंगे, धन-ज़न-बाहुबली बटमारे
जो जनता से हरदम झूठे वादे करते
खरी कहत कविराय, अन्त में आहें भरते

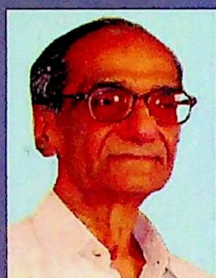
□□□






185395


185395
Gurukula Kangri



ओमप्रकाश चतुर्वेदी 'पराग'

जन्म	:	4 मई, 1933
जन्म-स्थान	:	ग्राम जगम्मनपुर, जालौन (उ.प्र.)
माता	:	स्व. श्रीमती विद्यादेवी
पिता	:	स्व. श्री दामोदरदास चतुर्वेदी
शिक्षा	:	एम.ए., विशारद

सृजन-संसार

स्वरचित कृतियाँ :

गीत-संग्रह	धरती का कर्ज, देहरी दीप, अनकहा ही रह गया याद आता है जगम्मनपुर
ग़ज़ल-संग्रह	नदी में आग लगी है, फूल के अधरों पे पत्थर अमावस चाँदनी में, आदमी हूँ मैं मुकम्मल
बाल कविता-संग्रह	बड़ा दादा-छोटा दादा, मनपाखी
यात्रा-वृत्तांत	दर्रों का देश लद्दाख
व्यंग्य	बलिहारी, छोड़ो भी महाराज

संपादित कृतियाँ :

पद्य-गद्य की सत्रह पुस्तकें

साहित्यिक उपलब्धियाँ :

दूरदर्शन तथा आकाशवाणी के अनेक केन्द्रों से रचनाओं का प्रसारण
गीति-काव्य को समर्पित संस्था 'गीताभ' के संस्थापक/अध्यक्ष
कविता के अतिरिक्त कहानी, लेख, व्यंग्य का सृजन

विशेष :

उत्तर प्रदेश शासन के मनोरंजन कर विभाग में उपायुक्त के पद से सेवानिवृत्ति

वर्तमान पता :

विद्या विहार, एस.डी.-181, शास्त्रीनगर, गाजियाबाद
दूरभाष : 0120-2751829, 09312704388

असीम प्रकाशन, गाजियाबाद

ISBN : 978-81-922655-2-0